INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH AND TECHNOLOGY
ISSN 2582-7358
Impact Factor 6.328
Peer-Reviewed Journal

अर्थशास्त्र अध्ययन की उपयोगिता एवं भावी संभावनाओं का एक अध्ययन

डॉ. दिलीप पीपाड़ा

सह–आचार्य अर्थशास्त्र विभाग,

सेठ मथुरादास बिनानी राजकीय महाविद्यालय नाथद्वारा राज.

सांराशः –

सामाजिक विज्ञान में अर्थशास्त्र ही एक ऐसा विषय है जो कला का होते हुए भी, विज्ञान के किसी भी विषय को टक्कर देता है, यह एक ऐसा विषय है जिससे बैचलर की उपाधी प्राप्त करने पर रोजगार बाजार मे अमूमन सीधे अच्छे पैकेज पर कुर्सी ऑफर होती है, बाजारीकरण के दौर में विशेषज्ञों की काफी जरूरत रहती है, जो उत्पाद का बाजार के हिसाब से आकलन करते हैं।यह एक ऐसा विषय है जिसके लिए बडे–बडे संस्थानों की कटऑफ 97 फीसदी से भी ज्यादा जाती है जो बताती है इस विषय की उपयोगिता और लोकप्रियता को। यह विषय गणित, सांख्यिकी और अर्थशास्त्र का मिलाजुला रूप है। इसमें किसी भी उत्पाद की भविष्य में क्या मांग रहेगी, इसका आकलन किया जाता है। और यह आंकलन अर्थशास्त्र के विषय के ज्ञाता ही कर सकते हैं। यही कारण है कि वर्तमान मे अनेकों निगमो, सरकारों, संस्थाओं के द्वारा अर्थशास्त्र के विषय विशेषज्ञों की मांग की जाती है।

अर्थशास्त्र विषय का अध्ययन सामाजिक विज्ञान के साथ किया जाता है क्योंकि यह विषय मनुष्यों के व्यवहार का अध्ययन करता है। इस विषय मे मनुष्य की आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। सही मायने मे अर्थशास्त्र (इकोनॉमिक्स) सामाजिक विज्ञान की वह शाखा है, जिसके अन्तर्गत वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन, वितरण, विनिमय और उपभोग का अध्ययन किया जाता है। अर्थशास्त्र शब्द संस्कृत शब्दों के अर्थ (धन) और शास्त्र की संधि से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है– धन का अध्ययन। किसी विषय के संबंध में मनुष्यों के के बारे मे क्रमबद्ध ज्ञान को उस विषय का शास्त्र कहते हैं, इसलिए अर्थशास्त्र में मनुष्यों के अर्थसंबंधी कार्यो का क्रमबद्ध ज्ञान का समावेश होता है। अर्थशास्त्र का प्रयोग यह समझने के लिए भी किया जाता है कि अर्थव्यवस्था किस तरह से कार्य करती है। अर्थशास्त्रीय विवेचना का प्रयोग समाज में अपराध, शिक्षा, परिवार, स्वास्थ्य, कानून राजनीति, धर्म, सामाजिक संस्थान और युद्ध आदि में किए जाने से इस क्षैत्र का महत्व पिछले कुछ दशको से तेजी से बढा है।

अध्ययन के उद्देश्यः– वर्तमान मे अर्थशास्त्र के अध्ययन की उपयोगिता मे तेजी से वृद्धि हो रही है एवं वर्तमान मे विषय से इतर विधार्थियों के द्वारा भी अर्थशास्त्र के अध्ययन को महत्व दिया जा रहा है यहा तक की इंजिनियरिंग,एम.बी.ए.,बी.सी.ए.,एम.सी.ए.,आदि अनेकों ऐसे पाठ्यक्रम मे भी वर्तमान मे अर्थशास्त्र के अध्ययन को बहुत अधिक महत्व दिया जा रहा है। यही कारण है कि वर्तमान मे इसमे अध्ययन का महत्व तेजी से बढ़ता जा रहा है इस अध्ययन के उद्देश्य निम्न है।

1. अर्थशास्त्र विषय मे अध्ययन कर रहे विधार्थियों के भावी भविष्य की संभावनाओं की जानकारी प्राप्त करना।
2. विषय के अध्ययन के लिए सबसे अधिक अच्छी संस्थाओं के बारे मे जानकारी प्राप्त करना।
3. अर्थशास्त्र विषय का अध्ययन कर चुके विधार्थियों की वर्तमान आर्थिक स्थिति की जानकारी प्राप्त करना।
4. अर्थशास्त्र विषय का अध्ययन करना चाह रहे विधार्थियों के लिए उपयोगी जानकारी का एकत्रीकरण करना।

अध्ययन की परिकल्पनाऐः–

उपरोक्त अध्ययन निम्न परिकल्पनाओं पर आधारित है।

1.अर्थशास्त्र विषय मे अध्ययन कर रहे विधार्थियों के भावी भविष्य उज्ववल संभावनाऐ है क्योंकि वर्तमान मे अर्थशास्त्र के अध्ययन का महत्व बढता जा रहा है।

2. अर्थशास्त्र विषय के अध्ययन के लिए भारत मे काफी संस्थाएँ ऐसी है जिनकी काफी साख है।

3.अर्थशास्त्र विषय का अध्ययन कर चुके विधार्थियों की वर्तमान आर्थिक स्थिति काफी संतोषजनक है एवम् वे जीवन मे आर्थिक रूप से सफल हुए है।

अध्ययन की विधिः–प्रस्तुत अध्ययन द्वितियक प्रकार के संमकों पर आधारित है जिसमें विषय का अध्ययन कर विभिन्न क्षैत्रों मे सफलता प्राप्त कर रहे विभिन्न लोगों के कार्यो को रेखाकिंत किया गया है। यथा संभव इस अध्ययन को इस क्षैत्र की संपूर्ण जानकारी प्रदान करने योग्य बनाने का प्रयास किया गया है।

अर्थशास्त्र अध्ययन के बाद रोजगार के प्रमुख क्षैत्रः–वर्तमान के बहुत सारे ऐसे क्षैत्र है जिनमे अर्थशास्त्र विषय की लोकप्रियता मे तेजी से इजाफा हो रहा है। यह ऐसा क्षैत्र है जहा नौकरियों की कोई कमी नही है। सिविल सर्विसेज ,कर्मचारी चयन आयोग, बैकिंग, व्यापार, वाणिज्य, अध्यापन, उत्पादन, बाजार, आदि कही ऐसे क्षैत्र है जहा प्रतिभावान अर्थशास्त्र के विधार्थियों को हाथो–हाथ रोजगार प्राप्त होता है। ऐसे ही कुछ क्षैत्र निम्न है। भारत मे ही नही विदेशो मे भी अर्थशास्त्र के विषय विशेषज्ञों को काफी अधिक मांग हाती है जो इस क्षैत्र की लोकप्रियता को बताता है।

जर्नलिज्म और कानूनः– सरकार के द्वारा बनाये गये नये कानुनों को समझकर उसका कम्पनी के हित मे प्रयोग करने के लिए व उपभोक्ता संरक्षण व अन्य कई कानूनों के चलते वर्तमान मे कम्पनियों को कई प्रकार के केसों का सामना करना पडता है इस कारण रोज–रोज नया वकील करने के बजाय कम्पनिया आर्थिक सहलाकार व कानूनी सलहाकार पदों पर स्थायी नियुक्तिया प्रदान कर देती हैं।इस कारण यदि स्टूडेंट ने अर्थशास्त्रके साथ जर्नलिज्म का कोर्स कर रखा है तो सोने पर सुहागा जैसा है। वर्तमान में बिजनेस पत्रिका का क्रेज है और इन पत्र–पत्रिकाओं में ऐसे विधार्थियों के लिए अवसरों की कमी नहीं है। यह पत्रिकाए आर्थिक लेखों के लेखकों को अच्छा पारिश्रमिक प्रदान करती है। अर्थशास्त्र के साथ कानून की डिग्री रखने वाले स्टूडेंट्स के लिए लॉ फर्मो में काफी अवसर हैं। वित्तिय क्षैत्र भी एक ऐसा क्षैत्र है जहा पर अर्थशास्त्र के विधार्थियों की सदेव मांग बनी रहती है। बहुत सारी कम्पनीयों के द्वारा अर्थशास्त्र के जानकार को प्राथमिकता प्रदान की जाती है। इसके अलावा विदेशों में इस फील्ड के लोगों की डिमांड है। कॉर्पोरेट संसार और एमबीए व अर्थशास्त्र बैकग्राउंड वाले स्टूडेंट को में हाथों–हाथ नौकरी पर लिया जाता है।

जलवायु परिवर्तन विश्लेषकः– वर्तमान मे जलवायु परिवर्तन पर काफी काम किया जा रहा है एवं कम्पनियां बदलते जलवायु के अनुसार अपने आप को तैयार करने के लिए भी जलवायु परिवर्तन पर गहन अध्ययन करवाती है। ऐसे में पर्यावरण अर्थशास्त्र का महत्वपूर्ण रोल है। इस क्षैत्र के जानकार पानी की गुणवत्ता, वायूप्रदूषण, ग्लोबल वार्मिग पर कार्य कर अपनी अहम भूमिका का निर्वहन करते हैं।

बैंकिंग,बीमा और रिसर्चः–अर्थशास्त्र के वह विधार्थी जिन्होंने मौद्रिक नीति का गहन अध्ययन किया हो उनके उनके बैंकिंग क्षैत्र मे नौकरी पाने के अवसर बढ़ जाते हैं। कई बार बैकों के द्वारा जो विज्ञप्ति निकाली जाती है उसमे स्पष्ट रूप से लिखा जाता है कि यह केवल उन्ही के लिए है जिन्होने अर्थशास्त्र,गणित, सांख्यिकी या वाणिज्य का अध्ययन किया हो। इसके अलावा रिसर्च के एरिया में अग्रणी

कंपनियां ऐसे विधार्थियों को अवसर प्रदान करती हैं। इसके अतिरिक्त विदेशी विनिमय मे काम करने वाली व बीमा कम्पनियां भी प्रायः अर्थशास्त्र के विधार्थी को की काम पर रखना पंसद करती है।

अखिल भारतीय व राज्य आर्थिक सेवाः– कम्पनियों की तरह सरकार के द्वारा भी आर्थिक मामलों के लिए अखिल भारतीय व राज्य स्तर पर सांख्यिकीय अधिकारियों की नियुक्ति की जाती है। इस प्रकार की सेवाओं मे अर्थशास्त्र का अध्ययन करने वाले विधार्थियों के चयन के बहुत अधिक अवसर होते है क्योंकि इनका पूरा पाठ्यक्रम अर्थशास्त्र व सांख्यिकी पर ही आधारित होता है। आपको भारतीय आर्थिक सेवा परीक्षा में उपस्थित होने के लिए एमएससी या एमए कम से कम 55ः अंकों के साथ पुरा करना हाता है। चयन के बाद, देश के लिए योजना आयोगों में आर्थिक योजना और विश्लेषण जैसे कार्य करने का अवसर मिलता है। योजना बोर्ड, आर्थिक मामलों के मंत्रालय, राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण और अन्य विभागों में भी रखा जा सकता है।

अनुसंधान और परामर्श :–अर्थशास्त्र के विधार्थी अर्थशास्त्र अनुसंधान में आजीविका का विकल्प चुन सकते हैं, जिसमें उन्हें कई तरह के काम जैसे कि संमक एकत्र करना, बाजार के रुझान का पूर्वानुमान, आर्थिक और सांख्यिकीय डेटा का अध्ययन करना होता है। वर्तमान मे कई प्रकार के सर्वे भी कम्पनियों, टी.वी. पर एक्जिट पोल आदि का प्रसारण करने वालो, राजनीतिक दलों, विभिन्न समाजिक संगठनों के द्वारा करवाया जाता है जिसमे भी अर्थशास्त्र के विघाथियों के लिए काफी रोजगार की संभावना बनती है।

आर्थिक सहलाकारः–एक आर्थिक सहलाकार का मौलिक कार्य संगठनों से परामर्श करना है ताकि वे अपने प्रदर्शन में सुधार कर सकें। आर्थिक सहलाकार अपने रिसर्च और एनालिटिकल कौशल का उपयोग गहन अध्ययन करने के लिए करता है ताकि कंपनियां विशिष्ट परिस्थितियों में सुधार कर सकें। ऐसे वित्तिय सलाहकार, सरकारी अधिकारी, हेल्थकेयर, बिजनेस आदि जैसे कई ऑर्गनाइजेशन में इंडस्ट्रीज के लिए काम करते हैं। इसके अलावा, आर्थिक सहलाकार कानूनी मामलों में विशेषज्ञ गवाह के रूप में भी काम कर सकते हैं । प्रायः विभिन्न कम्पतियों के द्वारा रखे गये आर्थिक सहलाकार को 20 से 95 लाख अनुमानित सालाना वेतन तक मिल जाता है।

ऑन्ट्रप्रनरशिप मेंकामयाबी के अधिक मौकेः–वैसे स्टार्टअप तो कोई भी शुरू कर सकता है, लेकिन एक अर्थशास्त्र का विधार्थी इसे अच्छी तरह संभाल सकता है। दरअसल, वह किसी भी संसाधन का बेहतर और पूर्ण उपयोग जानता है क्योंकि ये बातें अर्थशास्त्र में पढ़ाई भी जाती हैं। वह मार्केट शेयर, इनवेस्टर वैल्यू आदि को अच्छी तरह समझता है। यही कारण है कि एक अर्थशास्त्र के विधार्थी के लिए सामान्य विधार्थी की तुलना मे सफलता के अधिक अवसर होते है।

रणनीति निर्माता :– अर्थशास्त्र में करियर बनाते समय विधार्थियों के पास रणनीति निर्माता के रूप मे भी कार्य करने के अवसर होते है। वह रीजनिंग की मदद से क्रिटिकल और एनालिटिकल रूप अपने कौशल से कम्पनी को आगे ले जाने मे कामयाब हो सकता है जिसका लाभ उसे आकर्षक पैकेज के रूप मे मिल सकता है। देश मे पूर्व प्रधानमत्री मनमोहन सिंह तो अपने इसे कौशल व अर्थशास्त्र की जानकारी के कारण देश के प्रधानमंत्री पद तक पहुचे जो अर्थशास्त्र की उपयोगिता को इंगित करता है।

बाजार अनुसंधान विश्लेषकः–एक कम्पनी का पूरा का पूरा कार्य बाजार के अनुसंधान पर आधारित होता है क्योंकि उसे अपने उत्पाद की मांग के बारे मे जानकारी के अतिरिक्त बाजार मे प्रतिदृन्दि कि द्वारा किस रणनीति का प्रयोग किया जा सकता है इसकी भी पूरी जानकारी रखना आवश्यक होता है। एक बाजार अनुसंधान विश्लेषक का काम अपने ज्ञान, विश्लेषणात्मक और सांख्यिकीय स्किल्स के उपयोग से उपस्थित संमकों का इस्तेमाल कर कंपनी के मुनाफे को बढ़ाना होता है।

बीमांकक व डेटा विश्लेषकः– वर्तमान मे व्यवसाय मे सफलता वही प्राप्त कर सकता है जो मांग का काफी अधिक सही सही अनुमान लगा पाने मे समर्थ होता है। क्योंकि इससे कम्पनी के लाभों मे वृद्धि होती है। बीमांकिक विज्ञान, उद्योग में कार्य कर रहे व्यवसायों और संगठनों को प्रभावित करने वाले जोखिमों और अनिश्चितताओं को मापने और प्रबंधित करने पर केंद्रित है। ऐसे जोखिमों की भविष्यवाणी करने और उनके प्रबंध के लिए परिसंपत्ति प्रबंधन, देयता प्रबंधन, गणित और संभाव्यता, डेटा विश्लेषण और मूल्यांकन सहित कई स्किल्स और ज्ञान की जरुरत होती है, जिसके लिए अर्थशास्त्रीयों की नियुक्ती की जाती है। इस कार्य के लिए उन्हे आकर्षक वेतन भी दिया जाता है।

आई.बी.पी.एस. और स्टेट बैंक भर्ती परीक्षाः– अर्थशास्त्र में सबसे लोकप्रिय रोजगार के अवसर है। बैंकिंग क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए, आप आई.बी.पी.एस. और स्टेट बैंक भर्ती परीक्षा जैसी परीक्षाओं में शामिल हो सकते हैं। इसके अलावा, अर्थशास्त्र की बड़ी कंपनियों को अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन और विश्व बैंक जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में भी काम के अवसर मिल सकते हैं। सार्वजनिक, निजी या विदेशी बैंकों में क्लर्क, विकास अधिकारी, शाखा प्रबंधक, आर्थिक सलाहकार आदि के रूप में भी काम कर सकते हैं।

अर्थशास्त्री के रूप मे सेवाएँः– वर्तमान मे काफी अधिक कम्पनियों के द्वारा अर्थशास्त्री के पद का सृजन कर उस पर नियुक्ति दी जा रही है। अर्थशास्त्री संमक एकत्र करने के लिए व संमकों का नमूनाकरण और सर्वेक्षण तकनीकों में अत्याधिक कुशल होते हैं तथा इसकी मदद से, वे पूर्वानुमान के लिए वर्तमान और ऐतिहासिक दोनों प्रवृत्तियों का मूल्यांकन करते हैं, जो व्यवसायों और संगठनों के लिए महत्वपूर्ण होता है।

सांख्यिकीविद् के रूप मे सेवाएँः– एक अर्थशात्र का विधार्थी एक सांख्यिकीय अधिकारी के रूप मे भी अपनी सेवाए प्रदान कर सकता है। सांख्यिकीविद् व्यावसायिक समस्याओं का सबसे उपयुक्त समाधान खोजने के लिए कठिन तथ्यों और संख्याओं का अध्ययन करते हैं जिसकी वर्तमान बाजारीकरण के दौर मे बहुत अधिक आवश्यकता होती है। इनका काम मात्रात्मक संमक एकत्र करने, विश्लेषण करने, व्याख्या करने और प्रस्तुत करने से संबंधित होता हैं जिसके माध्यम से किसी निगम मे रणनीतियों का निर्माण किया जाता है।

निगम के वित्त के वित्तीय विश्लेषक के रूप मे सेवाएँः– अर्थशात्र के विधार्थी एक वित्तीय विशलेषक के रूप मे भी अपनी सेवाए प्रदान कर सकते है। वित्तीय विश्लेषक कंपनी को स्मार्ट निवेश निर्णय लेने में मदद करने के लिए बाजार के रुझान, जनसांख्यिकी और सूक्ष्म आर्थिक कारकों का अध्ययन करते हैं एवम इन सभी आधारों को ध्यान मे रखकर निगम की रूपरेखा तैयार करते है।

रणनीति के बारे मे निर्णय लेने का कार्य :– अर्थशास्त्र का अध्ययन किसी भी विधार्थी को रणनीति पर काम करने वाला अधिकारी भी बना सकता है। प्रायः इस प्रकार के अधिकारी को अच्छा वेतन दिया जाता है। जैसा कि नाम से पता चलता है, एक पॉलिसी एनालिस्ट वह व्यक्ति होता है जो जनता को सीधे प्रभावित करने वाली समस्याओं का विशलेषण और शोध करता है।उनके पास ऊर्जा, विश्व व्यापार के संबंध मे नीतियां, वातावरण, नवीन प्रचलन मे चल रहे उत्पादो और सरकार की कर प्रणालीं जैसे समस्याग्रस्त मुद्दों का के बारे मे करने के लिए आवश्यक सभी आवश्यक कौशल होता हैं। क्योंकि जनता और विधायकों को समझाने के लिए उन्हें अपने शोध से प्राप्त संमको का प्रतिनिधित्व करना होता है।

प्रबंधन सलाहकर्ता के रूप मे सेवाए :– अर्थशास्त्र के विधार्थी के लिए यह भी एक रोजगार का प्रकार है। प्रायः किसी भी निगम के प्रबंधक आवश्यक नही है कि उस उत्पाद के विषय विशेषज्ञ हो ऐसी स्थिति मे वे प्राय कोई भी निर्णय लेते समय सहलाकर्ता की राय लेकर ही कोई निर्णय लेते है। ऐसे सलाहकर्ता महत्वपूर्ण ग्राहकों की सहायता के लिए व्यावसायिक मुद्दों की जांच करते हैं और संभावित समाधानों की खोज करते हैं। वे अपने ग्राहकों से परामर्श करने के लिए प्रतियोगी मॉडलिंग, सार्वजनिक बोलने के कौशल और लेखन जैसे अपने कौशल का उपयोग करते हैं। यही कारण है कि वर्तमान मे इनका महत्व बढता जा रहा है एवम इनकों काफी अच्छा वेतन भी प्राप्त होता है।

निर्णयकर्ता के रूप मे सेवाये प्रदान करनाः–अर्थशास्त्र में करियर का एक और फायदा यह है कि आप इसमे संमकों को किस प्रकार से थोडा बहुत फैर बदल कर अपने हित मे किया जाता है व किस प्रकार से कोई संमक उपलब्ध नही होने पर उसका अनुमान लगाया जाता है यह भी सीखते है कैसे किया जाता है और लोग किसी निष्कर्ष पर कैसे पहुंचते हैं। सांखिकिकी की जानकारी हमें अधिक गहराई से अधिक शोध करने में मदद करता है। इस तरह के शोध विभिन्न नीतियों के खोज और विकास के लिए आवश्यक हैं।

कंपनसेशन और बेनिफिट्स मेनेजर एक्चुरीः– ऐसा मैनेजर न्यूमेरिक रूप से सोच सकता है और लाभ और भुगतान के विकल्पों का सम्मान कर सकता है।और ग्राहकों को अपने तर्को से संतुष्ट कर सकता है उसके लिए भी रोजगार के बेहतरीन अवसर होते है। ये विभिन्न वर्गों की नौकरियों के लिए आपूर्ति और मांग की जांच करते हैं। इसके अलावा, वे रिपोर्ट बनाते हैं और सीनियर मैनेजमेंट को अपने रिसर्च का रिप्रेजेंटेशन करते हैं और कभी–कभी अपनी कंपनी के ह्यूमन रिसोर्स विभाग के साथ भी काम करते हैं। इस प्रकार के कार्य को संपादित करने वालों को भी काफी अकर्षक पैकेज विभिन्न कम्पनियों के द्वारा प्रदान किये जाते है।

क्रेडिट एनालिस्टः– यह भी एक अर्थशास्त्र के विधार्थी के लिए एक बेहतरीन उवसर कहा जा सकता है। वह अपने ज्ञान का प्रयोग एक क्रेडिट एनालिस्ट प्रोफेशंस या लोगों को अर्नेस्ट धन देने के इच्छुक जोखिमों का मूल्यांकन करने के लिए ग्राहकों का सूक्ष्म आर्थिक ऑर्गनाइजेशन करता सकता है। वे औधोगिक क्षेत्र, आर्थिक विक्रेता और प्रतियोगिता जैसे विभिन्न कारकों के आधार पर अंतिम निष्कर्ष पर पहुंचते हैं। अंत में, वे एक सारांश रिपोर्ट बनाते हैं। कई कम्पनियों के द्वारा इस प्रकार के क्रडिट एनालिस्ट को 20 से 55 लाख सालाना तक के पैकेज पर रखा हुआ है। वित्तिय विशलेषक ऐसे विशेषज्ञ होते हैं जो किसी व्यक्ति या व्यवसाय की साख का निर्धारण करते हैं। वे संभावित ग्राहकों का सूक्ष्म आर्थिक विश्लेषण करते हैं ताकि उन्हें ऋण देने से जुड़े जोखिमों का मूल्यांकन और पहचान की जा सके।

मार्केट रिसर्च एनालिस्टः–एक बाजार रिसर्च एनालिस्ट का काम इंडस्ट्रीज और ट्रेंड्स का रिसर्च और एनालिसिस करना है और यह निष्कर्ष निकालना है कि विभिन्न आर्थिक परिस्थितियों में सेवाओं और उत्पादों का प्रदर्शन कैसा होना चाहिए। अन्य विधार्थियों की तुलना मे एक अर्थशास्त्र कर जानकार इस कार्य के लिए अधिक उपर्युक्त होता है क्योंकि उसे विभिन्न प्रकार के बाजारों की जानकारी हाती है। बाजार रिसर्च एनालिस्ट्स को विभिन्न अध्ययनों को डिजाइन करने और डेटा एकत्र करने के लिए भी प्रशिक्षित किया जाता है। अंततः, वे ग्राहकों को मात्रात्मक रूप में डेटा का प्रतिनिधित्व करते हैं।

उद्यमिता या उघमी के रूप मे कार्य करना :– अर्थशास्त्रियों के पास बाजार के बारे में अच्छा खासा ज्ञान होता है। वे बाजार के रुझान और व्यापार के लाभदायक क्षेत्रों को जल्दी से समझ पाते हैं। इसलिए अपना खुद का व्यवसाय शुरु करना भी एक बेहतरीन रोजगार का क्षैत्र है। बहुत सारे अर्थशास्त्र के विधार्थियों ने अपने स्वयं का व्यवसाय प्रारम्भ करके भी काफी अधिक सफलता प्राप्त की है।

अन्य कार्यः–उपरोक्त कार्यो के अतिरिक्त भी कई प्रकार के रोजगार के क्षैत्र है जहा पर एक अर्थशास्त्र का अध्ययन करने वाला विधार्थी उपने ज्ञार का परचम फहरा कर रोजगार के क्षैत्र मे सफलता प्राप्त कर सकता है। उनका उपयोग व्यवसाय, बैंकिंग, बीमा, विदेशी व्यापार, कृषि उद्योग, राजकोष व मौद्रिक विश्लेषण के साथ–साथ पूंजी बाजार में होने वाले परिवर्तनों का मूल्याकंन करने में ये काफी सहायक सिद्ध हो सकता है।

उपरोक्त आधार पर यह कहा जा सकता है कि अर्थशास्त्र का अध्ययन किसी भी विधार्थी के लिए रोजगार की असीम संभावनाओं के द्वारा खोल सकता है केवल आवश्यकता होती है विषय के बारे मे गहन जानकारी रखने की प्राय जो विधार्थी विषय की गंभीरता को ना समझकर केवल इस विषय मे उपाधि प्राप्त करते है उन्हे उतने रोजगार के अवसर प्राप्त नही होते है जितने की सही अध्ययन कर

विषय को आत्मसाध करने वाले विधार्थी को इसलिये यदि अपने इस विषय का चयन किया है तो आपको इसका अध्ययन बहुत ही मनोयोग से करना चाहिए। मनोयोग से किया गया अध्ययन निश्चय ही आपके लिए सफलता के नये द्वार खोलने मे सक्षम होगा। उपरोक्त आधार पर यह कहा जा सकता है कि हमारे द्वारा ली गयी परिकल्पनाएँ सत्य सिद्ध होती है कि अर्थशास्त्र का अध्ययन करने के बाद विधार्थियो के सामने रोजगार के कई विकल्प उपलब्ध होते है।

अर्थशास्त्र किसे पढ़नी चाहिएः–

इस लेख मे विषय के बारे मे विस्तार से जानकारी दी गयी है परन्तु कुछ विधार्थियों के द्वारा इस विषय का चयन तो कर लिया जाता है परन्तु वे इस विषय को भी सामाजिक विज्ञान के अन्य विषयों की तरह से ही हल्के मे ले लेते है जो बाद मे उनकी असफलता का कारण बन जाता है इस कारण से इस विषय के चयन के पूर्व विधार्थी को निम्न बातों की जानकारी रखना आवश्यक प्रतीत होता है। सामान्य रूप से इसके लिए निम्न बातों का ध्यान रखना जरूरी है

- अगर कोई विधार्थी गणित को देखकर परेशान होता है तो उसे उच्च शिक्षा मे अर्थशास्त्र का अध्ययन प्रारम्भ करने से पूर्व एक बार वापस विचार कर लेना चाहिए क्यों के अर्थशास्त्र के सिद्धांतों को समझाने के लिए विधार्थी को गणित की सामान्य जानकारी होनी आवश्यक होती है पर अर्थशास्त्र पढ़ने से पहले एक बार जरूर सोचना चाहिए। यह जरूरी नहीं कि ग्रैजुएशन में अर्थशास्त्र पढने वाले विधार्थी को 12वीं स्तर की पूरा गणित की जानकारी हो।
- छात्र को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के आर्थिक मुद्दों में दिलचस्पी हो ताकी उसे अध्ययन करने मे रूचि हों।
- उसकी सोच और उसका व्यवहार समस्याओं के निदानात्मक दृष्टिकोण वाला होना चाहिये क्यों के वर्तमान मे निगमों को इसी प्रकार की समस्याओं का सामना करना पडता है।
- संमकों के साथ (डेटा) से खेलने में मजा आता हो।
- वह आर्थिक समस्याओं के प्रति जागरूकता रखता हो।
- तार्किक बुद्धि जो अर्थशास्त्र और सैद्धांतिक समस्याओं पर सोचने की क्षमता प्रदान करती है।
- रोजमर्रा के कार्यो और समस्याओं के प्रति तार्किक दृष्टिकोण।

अर्थशास्त्र विषय के अध्ययन के प्रमुख संस्थानः–

अर्थशास्त्र अध्ययन के लिये प्रमुख देशी व विदेशी संस्थानों की भी सामान्य जानकारी निम्न प्रकार है। विदेश मे अर्थशास्त्र विषय के अध्ययन के लिए मुख्य रूप से अध्ययन संस्थान निम्न है। इनमे प्रमुख नाम हावर्ड विश्वविधालय अमेरिका,मैसाचुसेट्स इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नॉलोजी विश्वविधालय अमेरिका,स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी अमेरिका,यूनिवसिटी ऑफ केलिफोनिया अमेरिका,प्रिंसटोन विश्वविधालय अमेरिका,लंदन स्कूल ऑफ इकनॉमिक्स ब्रिटेन,ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी ब्रिटेन,कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी ब्रिटेन,येले विश्वविधालय ब्रिटेन,यूनिवर्सिटी ऑफ केम्ब्रिज ब्रिटेन आदि प्रमुख है।

विदेश की तरह ही भारत मे भी कई संस्थान है जिनकी विश्व मे भी अच्छी पहचान है उनमे प्रमुख,दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स,श्री गोविन्द सिंह कालेज ऑफ कामर्स, दिल्ली,रामजस कालेज, दिल्ली,पटना यूनिवर्सिटी, पटना,गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर,पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ,आईआईटी खडगपुर,श्रीराम कॉलेज, नई दिल्ली,लखनऊ यूनिवर्सिटी, लखनऊ,सीएसजेएम यूनिवर्सिटी, कानपुर, इंडियन स्टैटिस्टिकल इंस्टिट्यूट, इंदिरा गांधी इंस्टिट्यूट ऑफ डिवेलपमेंट एंड रिसर्च,जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी आदि प्रमुख है इसके अतिरिक्त भी कई और संस्थान है जिनमे अध्ययन करके भारत मे भी अर्थशास्त्र का उच्चतर स्तर पर अध्ययन किया जा सकता है।

उपरोक्त आधार पर यह कहा जा सकता है कि अर्थशास्त्र विषम के काफी रोजगार की संभावनाएं विधमान है वर्तमान समय मे बेरोजगारी की समस्या के समाधान के लिए युवाओं के लिए अर्थशास्त्र का अध्ययन एक बेहतर विकल्प हो सकता है। अर्थशास्त्र मे ऐसे कई क्षैत्र है जिसमे युवाओं को रोजगार मिल सकता है कई बार युवाओं को जानकारी के अभाव मे वे उसका फायदा नही उठा पाता है। ऐसे समय पर युवाओं को इन पदों की जानकारी प्रदान करना आवश्यक है। इस दृष्टि से वर्तमान मे इस बात की आवश्यकता है कि अर्थशास्त्र विषय का अध्ययन करने के लिए यूवाओं को प्रेरित करना चाहिए ताकि अधिक से अधिक विधार्थी इसका फायदा उठा पाये।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः -

1. The General Theory of Employment, Interest and Money by Adam smith
2. Manias Panics and Crashes: A History of Financial Crises by Charles P. Kindleberger
3. The Reckoning: Financial Accountability and the Rise and Fall of Nations Factfulness: Ten Reasons We're Wrong About the World—and Why Things Are Better Than You Think
4. Poor Economics: A Radical Rethinking of the Way to Fight Global Poverty by Abhijit Banerjee and Esther Duflo
5. Economics in One Lesson: The Shortest and Surest Way to Understand Basic Economics
6. Economic Facts and Fallacies, 2nd edition
7. Poor Economics: A Radical Rethinking of the Way to Fight Global Poverty
8. The Economic Consequences of the Peace Good Economics for Hard Times
9. The Economics Book: Big Ideas Simply Explained
10. Doughnut Economics: Seven Ways to Think Like a 21st-Century Economist
11. Economics: Principles, Problems, & Policies (McGraw-Hill Series in Economics) – Standalone book
12. Principles of Economics, 7th Edition
13. Economics Through Everyday Life: From China and Chili Dogs to Marx and Marijuana
14. Economics 101: From Consumer Behavior to Competitive Markets–Everything You Need to Know About Economics (Adams 101)
15. Narrative Economics: How Stories Go Viral and Drive Major Economic Events
16. A Little History of Economics (Little Histories)
17. Introduction to Modern Economic Growth
18. How Rich Countries Got Rich and Why Poor Countries Stay Poor
19. States and the Reemergence of Global Finance: From Bretton Woods to the 1990s
20. Crashed: How a Decade of Financial Crises Changed the World
21. Prosperity without Growth
22. Basic Income: A Transformative Policy for India
23. Value in Ethics and Economics
24. Rentier Capitalism: Who Owns the Economy, and Who Pays for It?
25. The Gaza Strip: The Political Economy of De-Development